नारी विश्व कल्याणी

सम्पूर्ण विश्व में नारी शक्ति की महानता को कोई नकार नहीं पाया। सभी जानते है कि नारी से नर पैदा हुए, नारी गुणों की खान। नारी के सम्मान से जग का हो कल्याण।नारी दिव्यता और पवित्रता की शक्ति है। धर्मशास्त्रों में नारी के त्याग, तपस्या और सेवा के गुणों को वर्णित किया है और स्वीकार किया है कि नारी सर्व गुणों की खान है। किसी कवि ने तो यहाँ तक लिखा है कि

जल में निर्मलता चंदन में शीतलता देखी है, सागर में गभीरता पर्वत में अटलता देखी है।
हर एक में कोई न कोई विशेषता तो होती है, मगर एक साथ सारी विशेषताएं तो सिर्फ नारी में ही देखी है।

लेकिन आज का पुरूष प्रधान समाज क्या नारी को उस महानता से देखता है? उसकी महिमा सिर्फ शास्त्रों के पन्नों पर ही सिमटकर रह गई है। दैनिक जीवन में तो आज भी नारी को नर से पीछे माना जाता है। वह चाहे अपने परिवार के बीच हो चाहे वाह्य जगत में, उसकी आवाज सहमी-सहमी, जीवन घुटन भरा, डर और निराशा का आतंक उसके मन और मस्तिष्क से जाता नहीं है। उसका जीवन संघर्षों से भरा हुआ है। आज छोटे-छोटे मामले में भी महिलाओं को घरेलु हिंसा का शिकार होना पड़ता है। अन्याय के खिलाफ चुप रहना अत्याचार सहते रहना और फिर समझौता करना उसके लिए आम बात हो गई है। आज विश्व में ऐसा कोई देश नहीं है, जहाँ महिलायें अत्याचार और उत्पीड़न की शिकार नहीं होती। आतंकवाद भ्रष्टाचार, भुखमरी, गरीबी, बेकारी, जनसंहार जातीय विद्वेष और बलात्कार की भी मूल बनी रहती है। अब तो अपनी कमजोरियों का गला घोंटकर सबसे पहले-शिक्षा के क्षेत्र में महिलाओं को आगे आन होगा, क्योंकि अशिक्षा इसकी सबसे बड़ी कमजोरी है। अशिक्षा की वजह से ही भारत सरकार के लाखों प्रतिबंधों के पश्चात भी चोरी छिपे भ्रूण हत्याओं का सिलसिला जारी है। दहेज प्रथा से अभिशप्त परिवार बजपन से ही कक्षाओं को अधिक मान्यता नहीं देते। परन्तु अब समय में कुछ बदलाव आया है और शिक्षित तीव्र गति से आगे बढ़ रही है। अब समयओं से जूझना उसे मुश्किल नहीं लगता।

विकासशील राष्ट्रों में भारत निरंतर के पथ पर आगे बढ़ रहा है। सन् 1993 में भारत के नागरिकों की स्वतंत्रता समानता व आत्मरक्षा हेतु राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोज एवं महिला आयोकी स्थापना की गई थी जिसका प्रमुख उद्देश्य मानव अधिकारों की रक्षा करना और महिलाओं को उत्पीड़न से बचाना है लेकिन गरीबी और बेरोजगारी उन्हें शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ने नहीं देगी। महिलाएं अशिक्षित होने की वजह से अपने इन अधिकारों से अनभिज्ञ रह जाती है और निरंतर उत्पीड़न का शिकार होती रहती है। जब तक महिलाएं अपने उपर हो रहे अत्याचारों को आयोग के समक्ष नही रखेगी तो उनहें न्याय कैसे मिलेगा? कहीं-कहीं महिलाएं संकोचवश भी इन हिम्मत से बुराईयों पर विजय प्राप्त करना होगा। प्रारम्भिक काल से ही भारतवर्ष में नारियों की पूजा होती आई है। और इसीलिए शास्त्रों में भी देवताओं के पहले देवियों काा नाम लिया जाता है जैसे श्री लक्ष्मी फिर नारायण और श्री राध के बाद में श्रीकृष्ण। कहने का तात्पर्य देवियों को सर्वोपरी आगे रखा गया है। टीवी और विज्ञापनों में नारी का भोडा प्रदर्शन, व्यसन अश्लील नृत्य, फैशन शो दिखावा दन सभी से नारी की आंतरिक दिव्य शक्तियों का ह्रास हुआ है और यही कारण है कि अहंकारी पुरुष वर्ग महिलाओं को इन कमजोरियों का लाभ उठाकर विषय वासनाओं में लिप्त होता चला जा रहा है।

अत: अब समय की पुकार है कि हे देवियों -हे भारत की शक्तियों जागो उठो और पहचानों अपने निज स्वरूप को। तुम्हीं दुर्गा तुम्ही जगदम्बा हो और तुम्ही काली बनकर सर्व बुराईयों का सर्वनाश करने वाली हो। मंदिरों में घंटे और घड़ियाल बजा-बजाकर भक्तजन तुम्हारा आह्वान कर रहे हैं। तुम्हें पुकार रहे है, जगा रहे है क्योंकि सर्वनाश की जलती ज्वाला में तुम्हीं शीतला बनकर सभी को संतुष्ट कर सकती हो। अत: नारी स्वयं को कमजोर नहीं समझे वह अबला नहीं सबला हैं। सिर्फ आवश्यकता है स्वयं को समझने की स्वयं की पहिचान की। पुर्नबोध की अंतर्विहिन शक्तियों के पुनर्जागरण की। निश्चित ही अब महिलाओं में आया है और यह नवजागरण विश्व कल्याणकारी होगा।

परिवर्तन की आंधी है नारी पवित्तन से होगा कल्याण।

विश्व बदल जायेगा, होगा भारत देश महान।।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com